

P-ISSN: 2706-7483
E-ISSN: 2706-7491
NAAS Rating (2025): 4.5
IJGGE 2026; 8(3): 97-101
www.geojournal.net
Received: 20-03-2026
Accepted: 18-03-2026

गजपाल सिंह गुर्जर

शोधार्थी, भूगोल विभाग, जय
नारायण व्यास विश्वविद्यालय,
जोधपुर, राजस्थान, भारत

जय सिंह

प्रोफेसर, भूगोल विभाग, जय
नारायण व्यास विश्वविद्यालय,
जोधपुर, राजस्थान, भारत

अलवर जिले में ग्रामीण पर्यटन का सामाजिक-आर्थिक प्रभाव: एक भौगोलिक अध्ययन

गजपाल सिंह गुर्जर, जय सिंह

DOI: <https://doi.org/10.22271/27067483.2026.v8.i3a.776>

सारांश

ग्रामीण पर्यटन को समकालीन ग्रामीण विकास की एक महत्वपूर्ण रणनीति के रूप में देखा जा रहा है, विशेषकर उन क्षेत्रों में जहाँ पारंपरिक आजीविका के साधन सीमित होते जा रहे हैं। भारत जैसे विकासशील देश में ग्राम पर्यटन न केवल आर्थिक विविधीकरण का माध्यम है, बल्कि यह सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक पहचान को भी प्रभावित करता है। प्रस्तुत शोध अलवर जिले के चयनित ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राम पर्यटन के सामाजिक-आर्थिक प्रभावों का विश्लेषण करता है। अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि ग्राम पर्यटन ने स्थानीय आजीविका प्रतिरूपों, रोजगार अवसरों, आय की स्थिति तथा सामाजिक गतिशीलताओं को किस प्रकार प्रभावित किया है। यह अध्ययन क्षेत्राधारित एवं अनुभवजन्य प्रकृति का है और मुख्यतः प्राथमिक आँकड़ों पर आधारित है। प्राथमिक अध्ययन में सामाजिक-आर्थिक प्रभावों के आकलन हेतु लाइकर्ट स्केल आधारित प्रश्नों का उपयोग किया गया तथा वर्णनात्मक सांख्यिकीय तकनीकों के साथ एक-नमूना t-परीक्षण द्वारा परिणामों की पुष्टि की गई। अध्ययन यह दर्शाता है कि ग्राम पर्यटन ने आय के नए स्रोत, परिसंपत्तियों के आर्थिक उपयोग तथा स्थानीय निवेश को बढ़ावा दिया है। इसके साथ ही, सांस्कृतिक संरक्षण, महिलाओं की भागीदारी और सामाजिक पहचान के सुदृढीकरण जैसे सकारात्मक सामाजिक प्रभाव भी स्पष्ट हुए हैं। तथापि, रोजगार सृजन की प्रकृति अभी भी सीमित और असमान पाई गई है। समग्र रूप से, अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि ग्राम पर्यटन अलवर जिले में सतत ग्रामीण विकास की दिशा में एक प्रभावी, किंतु संतुलित नियोजन की अपेक्षा रखने वाला माध्यम है।

कुटशब्द: ग्रामीण पर्यटन, सामाजिक प्रभाव, लाइकर्ट स्केल, आर्थिक विविधीकरण

प्रस्तावना

पर्यटन विश्व के आर्थिक विकास के सबसे गतिशील क्षेत्रों में से एक के रूप में उभरा है, विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जहाँ पारंपरिक आजीविका पर्यावरणीय, आर्थिक तथा जनसांख्यिकीय दबावों के कारण संकट में है (Raihan, 2024)। हाल के दशकों में पर्यटन अध्ययनों का दायरा शहरी केंद्रों और सामूहिक पर्यटन स्थलों से आगे बढ़कर ग्रामीण क्षेत्रों तक विस्तृत हुआ है, जहाँ पर्यटन को स्थानीय विकास के एक व्यवहार्य साधन के रूप में देखा जा रहा है (Giampiccoli & Kalis, 2012)। ग्रामीण पर्यटन के एक स्वरूप के रूप में ग्राम पर्यटन, सामुदायिक सहभागिता, स्थानीय संसाधनों के उपयोग तथा स्वदेशी संस्कृति और परंपराओं के संवर्धन पर विशेष बल देता है। इसका महत्व केवल आय सृजन तक सीमित नहीं है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक संरचना, रोजगार प्रतिरूप तथा जीवन गुणवत्ता को प्रभावित करने की इसकी क्षमता में निहित है (Hassan *et al.*, 2022)।

जहां भारत जैसे विकासशील देशों में ग्रामीण क्षेत्र आज भी जनसंख्या के एक बड़े हिस्से का आधार हैं, किंतु इन क्षेत्रों की पहचान सीमित रोजगार अवसरों, कृषि उत्पादकता में गिरावट तथा स्थायी सामाजिक-आर्थिक विषमताओं से होती है। कृषि, जो परंपरागत रूप से ग्रामीण आजीविका की रीढ़ रही है, अब बढ़ती ग्रामीण श्रम शक्ति को समाहित करने में सक्षम नहीं रह गई है (Bisht *et al.*, 2020)। भूमि जोतों का विखंडन, उत्पादन लागत में वृद्धि तथा जलवायु संबंधी अनिश्चितताओं ने कृषि को एकमात्र आय स्रोत के रूप में और भी कम व्यवहार्य बना दिया है। इस परिप्रेक्ष्य में ग्राम पर्यटन एक वैकल्पिक एवं पूरक आजीविका विकल्प के रूप में उभरा है, जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विविधीकरण की क्षमता रखता है। आवास सेवाओं, स्थानीय परिवहन, हस्तशिल्प, खाद्य सेवाओं तथा सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से ग्राम पर्यटन आय के स्रोतों में विविधता लाता है और कृषि पर निर्भरता को कम करता है।

Author:

गजपाल सिंह गुर्जर

शोधार्थी, भूगोल विभाग, जय
नारायण व्यास विश्वविद्यालय,
जोधपुर, राजस्थान, भारत

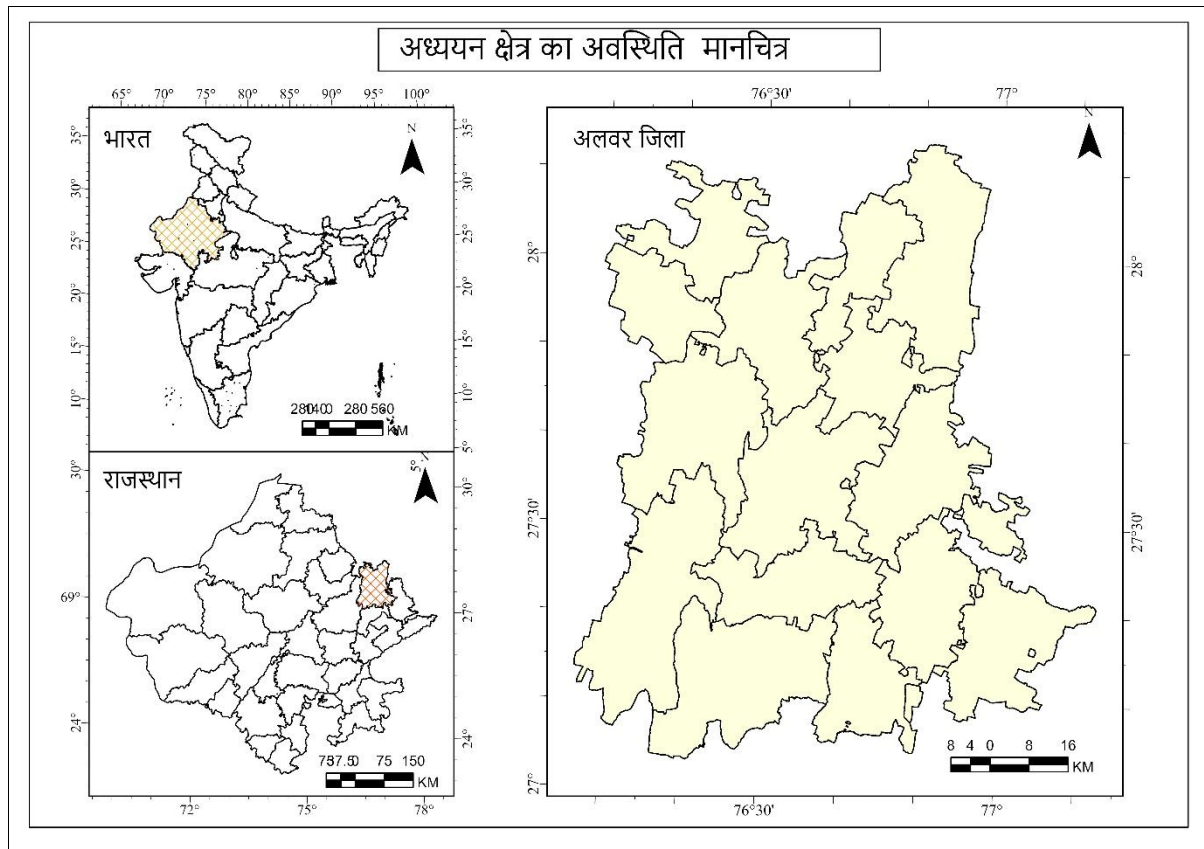
ग्राम पर्यटन का सामाजिक-आर्थिक प्रभाव केवल आर्थिक लाभों तक सीमित नहीं है। यह सामाजिक संबंधों, लैंगिक भूमिकाओं तथा सामुदायिक संगठन को भी प्रभावित करता है। पर्यटकों और स्थानीय समुदायों के बीच बढ़ता संपर्क प्रायः शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वच्छता के प्रति जागरूकता में वृद्धि करता है। विशेष रूप से महिलाएँ गृह-आधारित पर्यटन गतिविधियों, स्व-सहायता समूहों तथा लघु उद्यमों के माध्यम से लाभान्वित होती हैं। इसके साथ ही, ग्राम पर्यटन कुछ चुनौतियाँ भी उत्पन्न कर सकता है, जैसे सांस्कृतिक वस्तुकरण, लाभों का असमान वितरण तथा स्थानीय संसाधनों पर दबाव। अतः सतत ग्रामीण विकास में ग्राम पर्यटन की भूमिका को समझने के लिए इसके सामाजिक-आर्थिक प्रभावों का संतुलित मूल्यांकन आवश्यक है।

राजस्थान अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, विविध भौतिक परिदृश्यों तथा सुदृढ़ ऐतिहासिक पहचान के कारण भारत के पर्यटन मानचित्र में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यद्यपि राज्य में पर्यटन गतिविधियों परंपरागत रूप से शहरी केंद्रों और विरासत नगरों तक सीमित रही हैं, किंतु हाल के वर्षों में ग्रामीण क्षेत्रों को भी पर्यटन परिपथों में सम्मिलित किया जा रहा है। अलवर जिला अपने विविध भौतिक परिवेश, प्रमुख शहरी केंद्रों के सापेक्ष निकटता तथा सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय दृष्टि से महत्वपूर्ण ग्रामीण स्थलों की उपस्थिति के कारण ग्राम पर्यटन के अध्ययन हेतु एक विशिष्ट क्षेत्र प्रस्तुत करता है। जिले की ग्रामीण अर्थव्यवस्था मिश्रित स्वरूप की है, जहाँ कृषि, पशुपालन और मजदूरी के साथ-साथ पर्यटन से संबंधित गतिविधियाँ उभर रही हैं। यह विशेषता अलवर को इस बात के अध्ययन के लिए उपयुक्त बनाती है कि ग्राम पर्यटन किस प्रकार विद्यमान सामाजिक-आर्थिक संरचनाओं के साथ अंतःक्रिया करता है।

इसी संदर्भ में, प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य अलवर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राम पर्यटन के सामाजिक-आर्थिक प्रभावों का विश्लेषण करना है। प्राथमिक क्षेत्रीय आँकड़ों तथा वर्णनात्मक-विश्लेषणात्मक पद्धतियों पर आधारित यह अध्ययन चयनित गाँवों में आजीविका प्रतिरूपों, रोजगार अवसरों, आय स्रोतों तथा सामाजिक गतिशीलताओं में आए परिवर्तनों की जाँच करता है। यह शोध ग्रामीण विकास से संबंधित व्यापक विमर्श में योगदान देने का प्रयास करता है, जिसमें ग्राम पर्यटन को केवल बाजार-प्रेरित गतिविधि न मानकर एक स्थानीय रूप से अंतर्निहित प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस दृष्टिकोण के माध्यम से अर्ध-शुष्क ग्रामीण परिवेश में ग्राम पर्यटन से जुड़ी संभावनाओं और सीमाओं की यथार्थपरक समझ विकसित करने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र: अलवर जिला

अलवर जिला राजस्थान राज्य के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित है और भौगोलिक दृष्टि से एक संक्रमणीय क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ अरावली पर्वतमाला का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यह जिला पश्चिमी शुष्क क्षेत्रों और पूर्वी मैदानी प्रदेशों के बीच स्थित होने के कारण भौतिक तथा मानवीय भू-दृश्यों में विविधता प्रस्तुत करता है। जिले की स्थलाकृति मुख्यतः अरावली की पहाड़ियों, उनसे जुड़े संकरे घाटियों, अंतर्पर्वतीय मैदानों तथा समतल कृषि क्षेत्रों से निर्मित है। यह भौगोलिक विविधता जल निकास, भूमि उपयोग तथा ग्रामीण बसावट संरचना को प्रभावित करती है।



मानचित्र 1 : अलवर जिले की अवस्थिति

अलवर जिले की जलवायु अर्ध-शुष्क से उप-आर्द्र श्रेणी में आती है। ग्रीष्म ऋतु अपेक्षाकृत गर्म होती है, जबकि मानसून के दौरान मध्यम वर्षा होती है। जिले में मौसमी नदियाँ, छोटे जलाशय और पारंपरिक जल संरचनाएँ ग्रामीण जीवन के लिए महत्वपूर्ण हैं। वन क्षेत्र, विशेषकर अरावली से जुड़े भागों में, जैव विविधता और प्राकृतिक सौंदर्य प्रदान करते हैं, जो ग्रामीण पर्यटन की दृष्टि से विशेष महत्त्व रखते हैं। कृषि, पशुपालन और मजदूरी यहाँ की पारंपरिक आजीविका के प्रमुख आधार रहे हैं, हालाँकि हाल के वर्षों में इनके साथ गैर-कृषि गतिविधियाँ भी विकसित हुई हैं। ग्रामीण पर्यटन के संदर्भ में अलवर जिला विशिष्ट संभावनाएँ रखता है। जिले के ग्रामीण क्षेत्र प्राकृतिक परिदृश्य, वन परिवेश, पारंपरिक जीवनशैली, लोककला, हस्तशिल्प और सांस्कृतिक परंपराओं से समृद्ध हैं। ये तत्व ग्रामीण पर्यटन को आकर्षक बनाते हैं और पर्यटकों को शहरी जीवन से भिन्न अनुभव प्रदान करते हैं। अनेक गाँवों में स्थानीय समुदाय पर्यटन से संबंधित गतिविधियों, जैसे ग्रामीण आवास, स्थानीय मार्गदर्शन, हस्तनिर्मित उत्पादों और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से जुड़े रहे हैं।

आकड़े एवं अनुसंधान कार्यप्रणाली

इस अध्ययन में अलवर जिले के चयनित ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राम पर्यटन के सामाजिक-आर्थिक प्रभावों का परीक्षण करने हेतु क्षेत्राधारित, वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अनुसंधान अभिकल्प पर आधारित है। इस अध्ययन की कार्यप्रणाली मुख्यतः प्राथमिक आँकड़ों पर आश्रित है, जिनके माध्यम से पर्यटन गतिविधियों से प्रभावित आजीविका प्रतिरूपों, रोजगार अवसरों, आय की स्थिति तथा चयनित सामाजिक आयामों में आए परिवर्तनों को अध्ययन किया गया है। यह दृष्टिकोण अनुभवजन्य प्रकृति का है और सामाजिक-आर्थिक भूगोल के पारंपरिक ढाँचे का अनुसरण करता है, जिसमें मात्रात्मक निष्कर्षों को क्षेत्रीय अवलोकन और उत्तरदाताओं की धारणाओं के साथ संबद्ध किया गया है। प्रतिदर्श ग्रामों और उत्तरदाताओं के चयन हेतु बहु-स्तरीय नमूना पद्धति अपनाई गई। प्रथम चरण में उन ग्रामों का उद्देश्यपूर्ण चयन किया गया जहाँ ग्राम पर्यटन से संबंधित गतिविधियाँ, जैसे होम-स्टे, स्थानीय मार्गदर्शन, हस्तशिल्प निर्माण तथा सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ, सक्रिय रूप से विद्यमान थीं। द्वितीय चरण में इन चयनित ग्रामों के भीतर परिवारों का चयन साधारण यादृच्छिक नमूना पद्धति द्वारा किया गया (Sawatsuk *et al.*, 2018)। प्राथमिक आँकड़ों का संकलन संरचित अनुसूची के माध्यम से किया गया, जिसे अनौपचारिक साक्षात्कारों तथा प्रत्यक्ष क्षेत्रीय अवलोकन से पूरित किया गया। प्रश्नावली में सामाजिक-आर्थिक विशेषताओं तथा घरेलू स्तर पर पर्यटन-जनित परिवर्तनों से संबंधित अनुभाग सम्मिलित थे। ग्राम पर्यटन के प्रभावों के प्रति उत्तरदाताओं की धारणा को मापने के लिए पाँच-बिंदु लाइकर्ट स्केल का प्रयोग किया गया (Woo *et al.*, 2016)। उत्तरदाताओं से रोजगार सृजन, आय में सुधार, महिलाओं की भागीदारी तथा समग्र जीवन स्तर से संबंधित बिंदुओं पर अपनी सहमति का स्तर व्यक्त

करने के लिए कहा गया जिन्हें क्रमशः 5 से 1 तक संख्यात्मक मान प्रदान किए गए।

संग्रहित आँकड़ों के विश्लेषण हेतु वर्णनात्मक सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया गया। व्यावसायिक संरचना और आय वितरण के अध्ययन के लिए आवृत्तियों और प्रतिशतों की गणना की गई, जबकि लाइकर्ट स्केल आधारित प्रतिक्रियाओं को संक्षेपित करने के लिए माध्य मान और मानक विचलन का उपयोग किया गया। माध्य मान की गणना निम्न सूत्र द्वारा की गई:

$$\bar{X} = \frac{\sum X}{N}$$

जहाँ $\bar{X}$ माध्य मान को दर्शाता है, X व्यक्तिगत प्रतिक्रियाओं के मान को सूचित करता है तथा N कुल उत्तरदाताओं की संख्या को दर्शाता है। प्रतिक्रियाओं में विद्यमान विविधता को समझने के लिए मानक विचलन की गणना की गई।

यह परीक्षण करने के लिए कि क्या ग्राम पर्यटन से सामाजिक-आर्थिक स्तर पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है, चयनित लाइकर्ट स्केल चरकों पर एक-नमूना t-परीक्षण (One Sample t-test) लागू किया गया। इस परीक्षण के अंतर्गत प्रेक्षित माध्य धारणा मान की तुलना एक काल्पनिक तटस्थ मान से की गई (Nyaupane & Thapa, 2006)। t-सांख्यिकी की गणना निम्न सूत्र के माध्यम से की गई:

$$t = \frac{\bar{X} - \mu}{s/\sqrt{N}}$$

जहाँ $\bar{X}$ नमूना माध्य मान को प्रदर्शित करता है, μ परिकल्पित माध्य मान (तटस्थ मान) को सूचित करता है, s नमूना मानक विचलन को दर्शाता है तथा N नमूना आकार को निरूपित करता है।

इस परीक्षण में शून्य परिकल्पना यह मानती है कि ग्राम पर्यटन का कोई महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक प्रभाव नहीं है, जबकि वैकल्पिक परिकल्पना ग्राम पर्यटन के सकारात्मक सामाजिक-आर्थिक प्रभाव को स्वीकार करती है।

वर्णनात्मक सांख्यिकी और सरल अनुमानी परीक्षण का यह संयुक्त प्रयोग एक संतुलित कार्यप्रणालीगत ढाँचा प्रदान करता है। यह क्षेत्रीय स्तर की वास्तविकताओं की क्रमबद्ध व्याख्या करने में सहायक है तथा सामाजिक-आर्थिक एवं ग्रामीण पर्यटन अध्ययनों के लिए अपेक्षित विश्लेषणात्मक स्पष्टता और अकादमिक कठोरता को बनाए रखता है।

परिणाम

तालिका 1: ग्रामीण पर्यटन के प्रमुख आर्थिक एवं सामाजिक संकेतक

क्रम सं.	संकेतक का प्रकार	प्रभाव संकेतक	माध्य मान (Mean)	मानक विचलन (SD)
1	आर्थिक	ग्रामीण पर्यटन के परिणामस्वरूप स्थानीय रोजगार के अवसरों में वृद्धि	3.4575	1.3957
2	आर्थिक	पर्यटन के माध्यम से स्थानीय एवं हस्तनिर्मित उत्पादों की मांग में वृद्धि	3.7375	1.2113
3	आर्थिक	ग्रामीण पर्यटन से निजी एवं घरेलू निवेश गतिविधियों को प्रोत्साहन	3.8200	1.2253
4	आर्थिक	भूमि एवं आवासीय संपत्ति के किराये से घरेलू आय में वृद्धि	4.1175	1.0731
5	आर्थिक	ग्रामीण क्षेत्रों में भूमि एवं संपत्ति मूल्यों में वृद्धि	4.0875	1.0666
6	सामाजिक	ग्रामीण पर्यटन द्वारा स्थानीय संस्कृति एवं लोककला का संरक्षण	4.0200	1.1436
7	सामाजिक	स्थानीय समुदाय में सांस्कृतिक पहचान एवं आत्मगौरव की भावना का सुदृढीकरण	3.7125	1.2364
8	सामाजिक	महिलाओं की सामाजिक भागीदारी एवं आय-संबंधी अवसरों में विस्तार	3.6050	1.2238
9	सामाजिक	स्थानीय खान-पान, पारंपरिक उत्पादों एवं हस्तशिल्प की सामाजिक स्वीकृति में वृद्धि	3.6100	1.2716
10	सामाजिक	ग्रामीण जीवनशैली एवं सामाजिक संरचना में परिवर्तन की प्रक्रिया	3.4700	1.2897

स्त्रोत : प्राथमिक सर्वेक्षण से प्राप्त आँकड़े

तालिका 1 में प्रस्तुत चयनित आर्थिक एवं सामाजिक संकेतकों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि अलवर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन गतिविधियों का प्रभाव केवल आय तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसने ग्रामीण अर्थव्यवस्था और सामाजिक संरचना दोनों को प्रभावित किया है। आर्थिक संकेतकों में भूमि एवं आवासीय संपत्ति को किराये पर देने से घरेलू आय में वृद्धि का माध्य मान सर्वाधिक पाया गया। यह स्थिति दर्शाती है कि ग्रामीण पर्यटन ने परंपरागत परिसंपत्तियों को आय-सृजन के साधनों में परिवर्तित किया है, जिससे ग्रामीण परिवारों की आर्थिक स्थिरता में सुधार हुआ है।

भूमि एवं संपत्ति मूल्यों में वृद्धि से संबंधित उच्च माध्य मान यह संकेत करता है कि पर्यटन के विस्तार ने ग्रामीण क्षेत्रों की आर्थिक महत्ता को बढ़ाया है। यह प्रवृत्ति ग्रामीण क्षेत्रों में पूंजी प्रवाह और निवेश के नए अवसरों को जन्म देती है। साथ ही, निजी एवं घरेलू निवेश गतिविधियों में वृद्धि का अपेक्षाकृत उच्च माध्य मान यह दर्शाता है कि ग्रामीण पर्यटन ने स्थानीय स्तर पर उद्यमशीलता और जोखिम वहन की क्षमता को सुदृढ़ किया है।

स्थानीय एवं हस्तनिर्मित उत्पादों की मांग में वृद्धि का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि पर्यटन ने ग्रामीण उत्पादक प्रणाली को पुनर्जीवित करने में योगदान दिया है। इससे कारीगरों, छोटे उत्पादकों और पारंपरिक व्यवसायों को बाज़ार से जोड़ने का अवसर प्राप्त हुआ है। वहीं, रोजगार के अवसरों में वृद्धि का मध्यम स्तर का माध्य मान यह दर्शाता है कि पर्यटन ने रोजगार तो सृजित किए हैं, परंतु उनकी प्रकृति प्रायः मौसमी और असमान रही है, जिससे सभी सामाजिक वर्ग समान रूप से लाभान्वित नहीं हुए हैं। सामाजिक संकेतकों के संदर्भ में, स्थानीय संस्कृति एवं लोककला के संरक्षण से संबंधित उच्च माध्य मान ग्रामीण पर्यटन की सांस्कृतिक भूमिका को रेखांकित करता है। पर्यटन गतिविधियों के माध्यम से परंपरागत कला, उत्सव और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ न केवल संरक्षित हुई हैं, बल्कि उन्हें नया सामाजिक और आर्थिक महत्व भी प्राप्त हुआ है। सांस्कृतिक पहचान एवं आत्मगौरव की भावना में वृद्धि यह दर्शाती है कि पर्यटन ने ग्रामीण समुदायों के आत्मबोध और सामाजिक आत्मसम्मान को सुदृढ़ किया है।

महिलाओं की सामाजिक भागीदारी एवं आय-संबंधी अवसरों में वृद्धि का विश्लेषण यह संकेत देता है कि ग्रामीण पर्यटन ने पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं में आंशिक परिवर्तन उत्पन्न किया है। घरेलू स्तर पर संचालित पर्यटन गतिविधियों ने महिलाओं को आर्थिक गतिविधियों से जोड़ने में सहायक भूमिका निभाई है।

इसके अतिरिक्त, ग्रामीण जीवनशैली एवं सामाजिक संरचना में परिवर्तन से संबंधित निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि पर्यटन के प्रभाव धीरे-धीरे सामाजिक मूल्यों, व्यवहारों और जीवन-पद्धतियों तक विस्तारित हो रहे हैं।

चर्चा

अलवर जिले में ग्रामीण पर्यटन एक महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनकारी कारक के रूप में उभर रहा है, यद्यपि इसके प्रभाव सभी ग्रामीण क्षेत्रों और सामाजिक वर्गों में समान रूप से वितरित नहीं हैं। भूमि एवं आवासीय संपत्तियों को किराये पर देने से आय में वृद्धि यह दर्शाती है कि ग्रामीण परिसंपत्तियाँ अब केवल उपभोग या परंपरागत उपयोग तक सीमित नहीं रह गई हैं, बल्कि उन्हें आय सृजन के साधन के रूप में अपनाया जा रहा है। यह प्रवृत्ति ग्रामीण अर्थव्यवस्था में बाज़ार उन्मुखीकरण की ओर संकेत करती है, जहाँ स्थानीय संसाधनों का आर्थिक मूल्य बढ़ रहा है।

जहाँ निजी एवं घरेलू निवेश गतिविधियों में वृद्धि का पाया जाना यह स्पष्ट करता है कि पर्यटन ने ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक आत्मविश्वास को सुदृढ़ किया है। ग्रामीण परिवार पर्यटन से संबंधित छोटे व्यवसायों, आवास सुविधाओं तथा सेवा गतिविधियों में निवेश करने के लिए प्रेरित हुए हैं। परंतु रोजगार सृजन का प्रभाव अपेक्षाकृत मध्यम स्तर का रहा है, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि पर्यटन से उत्पन्न रोजगार अवसर प्रायः मौसमी, अस्थायी अथवा सीमित कौशल आधारित हैं। इसके परिणामस्वरूप सभी वर्गों को समान लाभ प्राप्त नहीं हो पा रहा है।

स्थानीय एवं हस्तनिर्मित उत्पादों की मांग में वृद्धि ग्रामीण कारीगरों और पारंपरिक व्यवसायों के लिए सकारात्मक संकेत प्रस्तुत करती है। पर्यटन ने ग्रामीण उत्पादों को व्यापक बाज़ार से जोड़ने में सहायक भूमिका निभाई है, जिससे स्थानीय उत्पादन प्रणालियों को नया प्रोत्साहन मिला है। यह प्रक्रिया न केवल आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि सांस्कृतिक संरक्षण के संदर्भ में भी सार्थक है। सामाजिक प्रभावों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण पर्यटन ने स्थानीय संस्कृति, लोककला और परंपराओं को पुनर्जीवित करने में योगदान दिया है। सांस्कृतिक पहचान एवं आत्मगौरव की भावना में वृद्धि यह दर्शाती है कि पर्यटन के माध्यम से ग्रामीण समुदायों को अपनी सांस्कृतिक विरासत के महत्व का पुनः बोध हुआ है। महिलाओं की सामाजिक भागीदारी और आय-संबंधी अवसरों में वृद्धि इस बात की ओर संकेत करती है कि पर्यटन ने ग्रामीण समाज में पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं को आंशिक रूप से पुनर्परिभाषित किया है। साथ ही, ग्रामीण

जीवनशैली एवं सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन यह दर्शाता है कि पर्यटन के प्रभाव धीरे-धीरे सामाजिक संरचना और व्यवहारिक पैटर्न तक विस्तारित हो रहे हैं।

निष्कर्ष

यह अध्ययन निष्कर्षतः स्पष्ट करता है कि अलवर जिले में ग्रामीण पर्यटन एक बहुआयामी प्रक्रिया के रूप में विकसित हुआ है, जिसने ग्रामीण अर्थव्यवस्था और समाज दोनों पर प्रभाव डाला है। पर्यटन ने आय के नए स्रोत, परिसंपत्तियों के आर्थिक उपयोग और स्थानीय निवेश को प्रोत्साहित किया है, जिससे ग्रामीण परिवारों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। इसके साथ-साथ, सांस्कृतिक संरक्षण, महिलाओं की भागीदारी और सामाजिक पहचान के सुदृढीकरण जैसे सकारात्मक सामाजिक प्रभाव भी सामने आए हैं। हालाँकि, अध्ययन यह भी दर्शाता है कि ग्रामीण पर्यटन के लाभ समान रूप से वितरित नहीं हैं और रोजगार के अवसरों की प्रकृति अभी भी सीमित एवं अस्थायी बनी हुई है। इस प्रकार, ग्रामीण पर्यटन को केवल आर्थिक गतिविधि के रूप में नहीं, बल्कि एक समग्र सामाजिक-आर्थिक प्रक्रिया के रूप में समझने की आवश्यकता है। समग्र रूप से, अलवर जिले का अनुभव यह संकेत देता है कि यदि ग्रामीण पर्यटन को स्थानीय समाज और संसाधनों के अनुरूप विकसित किया जाए, तो यह ग्रामीण क्षेत्रों में सतत सामाजिक-आर्थिक विकास का प्रभावी माध्यम बन सकता है।

संदर्भ सूची

1. Bisht IS, Pal Ahlawat S, Rana JC. The future of smallholder farming in India: some sustainability considerations. *Sustainability*. 2020;12(9):3751. DOI: 10.3390/su12093751.
2. Giampiccoli A, Kalis JH. Tourism, food, and culture: community-based tourism, local food, and community development in Mpondoland. *Culture, Agriculture, Food and Environment*. 2012;34(2):101–123. DOI: 10.1111/j.2153-9561.2012.01071.x.
3. Hassan TH, Salem AE, Abdelmoaty MA. Impact of rural tourism development on residents' satisfaction with the local environment, socio-economy and quality of life in Al-Ahsa Region, Saudi Arabia. *International Journal of Environmental Research and Public Health*. 2022;19(7):4410. DOI: 10.3390/ijerph19074410.
4. Ministry of Tourism, Government of India. India tourism statistics 2022. New Delhi: Government of India; 2023.
5. Ministry of Tourism, Government of India. Incredible India: rural tourism guidelines. New Delhi: Government of India; 2020.
6. Nyaupane GP, Thapa B. Perceptions of environmental impacts of tourism: a case study at ACAP, Nepal. *International Journal of Sustainable Development and World Ecology*. 2006;13(1):51–61. DOI: 10.1080/13504500609469661.
7. Raihan A. Environmental impacts of the economy, tourism, and energy consumption in Kuwait. *Kuwait Journal of Science*. 2024;51(4):100264. DOI: 10.1016/j.kjs.2024.100264.
8. Office of the Registrar General & Census Commissioner, India. Census of India 2011: primary census abstract. New Delhi: Government of India; 2011.
9. Rajasthan Tourism Department. Annual report 2022–23. Jaipur: Government of Rajasthan; 2023.
10. Rajasthan Tourism Development Corporation. Tourism statistics of Rajasthan. Jaipur: Government of Rajasthan; 2022.
11. Rajasthan Tourism Department. Tourism policy of Rajasthan. Jaipur: Government of Rajasthan; 2021.
12. Sawatsuk B, Darmawijaya I, Ratchusanti S, Phaokrueng A. Factors determining the sustainable success of community-based tourism: evidence of good corporate governance of Mae Kam Pong Homestay, Thailand. *International Journal of Business and Economic Affairs*. 2018;3(1). DOI: 10.24088/ijbea-2018-31002.
13. Woo E, Uysal M, Sirgy MJ. Tourism impact and stakeholders' quality of life. *Journal of Hospitality and Tourism Research*. 2018;42(2):260–286. DOI: 10.1177/1096348016654971.